रामभक्ति काव्य की भावगत विशेषता

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

रामानुजाचार्य ने 'श्री' संप्रदाय की स्थापना की। उन्हीं की शिष्य परंपरा में रामानंद ने रामभक्ति शाखा की स्थापना की। इनके अनुसरण में अनेक राम भक्त कवियों ने इस शाखा को विकसित किया। इस शाखा के अग्रणी कवि तुलसीदास हैं। उनके अतिरिक्त केशवदास, नाभदास, अग्रदास, हृदयराम आदि अन्य प्रसिद्ध कवि हैं। राम काव्य धारा में अवतारवादी उपासना तथा समन्वयवादी दृष्टिकोण है। रामभक्ति काव्य की भावगत विशेषता का विवेचन निम्नांकित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है।

भावगत विशेषताएं

1. राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप की स्थापना :- मर्यादा एक मूल्य है वह व्यक्ति को संयम में रहने की प्रेरणा देता है और समाज को संगठित रहता है। तुलसीदास ने 'मानस' की रचना करके विविध मर्यादाओं की स्थापना की। राम राजा होकर भी एक पत्नी व्रत धारण करते हैं जिससे सामन्तवादी चेतना और बहुपत्नीवाद का विरोध होता है। राम का चरित्र समाज के विभिन्न रिश्तों का मर्यादित स्वरूप प्रस्तुत करता है। राम का राज्य ऐसा है जहां 'सुलभ पदारथ चारी राम राज विषयता खोई, और नहिं दरिद कोऊ दुखी न कीना' जैसी स्थितियां हैं।

2. लोक मंगल की साधना :- रामभक्त कवि समाज में मंगल लाने के इच्छुक हैं। वे स्वांत: सुखय रचना करते हैं। उनके यहां 'धर्म' शब्द व्यापर अर्थों में प्रयुक्त होता है अर्थात् धर्म: कर्तव्य का प्रयास है और मानव मात्र का कर्तव्य दूसरों को सुख देता है।

'परहित सरिस धर्म नहीं भई
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।' (तुलसीदास)

'कीरत भनिति भूत भलि सोई

सुरसरि सम सब कहं हित होई।' (तुलसीदास)

अर्थात् यश, कविता और धन श्रेष्ट है जो देवनदी के समान सबका भला करें।

3. **समन्वयात्मक जीवन दृष्टि :-** भारत विविधताओं का देश है इसलिए यहां समन्वयात्मक दृष्टिकोण अनिवार्य है। द्विवेदी ने कहा है 'भारत का लोकनायक वहीं हो सकता है जो समन्वय का अपार धैर्य लेकर आया हो।' तुलसी ने भी समन्वय की चेष्टा की। उन्होंने विभिन्न धार्मिक पद्धतियों यथा सगुण-निर्गुण आदि में संबंध बताया।

'सगुनहिं अगुनहिं नहिं कधु भेदा।'

4. **गहन राजनीतिक बोध :-** भक्तिकाव्य में केवल राम परंपरा ने तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों का मूल्यांकन किया है। एक अच्छा कवि सदैव समाज के लिए सोचता है। तुलसीदास ने राम राज्य की धारणा से प्रजातांत्रिक राजतंत्र की कल्पना की है जहां व्यक्ति को अपनी जरूरत के अनुसार उपलब्ध हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार कार्य करना पड़े। जहां प्रजा की सुविधाओं का राजा सदा ध्यान रखे।

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखरी

सो नृप अवस नक्र अधिकारी।'

5.**नारी के प्रति दृष्टिकोण** :- रामभक्त कवियों ने अपने काव्य में पहली बार दु:खी-दरिद्र व्यक्तियों को स्थान देने का सामाजिक कार्य किया किन्तु नारी के प्रति उनकी दृष्टि प्राय: संकुचित ही नहीं। तुलसी ने नारी को तिरस्कृत करने वाली कुछ टिप्पणियां की हैं -

'ढोल गंवार, भूद्र, पशु, नारी

यें सब-ताड़न के अधिरारी।'

'नारी स्वभाव सत्य कवि कहंहिं

अवगुन आद सदा उर रहहिं।'

'जिमि स्वतंत्र होई पिगरहिं नारी।'

किंतु कई स्थानों पर तुलसी नारी की पराधीनता को दु:ख का कारण भी बताने लगते हैं -

'कत बिधि सृजी नारी ज़ग मातिं
पराधीन सपनहुं सुख नाहिं।'

कुल मिलाकर नारी के प्रति सामन्ती दृष्टिकोण से ये कवि अधिक ऊँचा नहीं उठ सके।

6. **वर्णव्यवस्था का समर्धन** :- तुलसीदास ने वर्णव्यवस्था का सिद्धांत का समर्थन ही किया है क्योंकि वे इस व्यवस्था को समाज को जोड़ने वाली बताते थे। किंतु उनके इस समर्थन में 'जड़ता' का समर्थन नहीं है। उन्होंने आदर्श वर्णव्यवस्था की कल्पना की है जहां राम जैसे शासक शबरी व निषाद जैसे अवर्णों के साथ मित्रता का संबंध रखते हैं।

7. दास्य भक्ति :- राम का चरित्र मर्यादा बद्ध है, वे पुरुषोत्तम है, इसलिए भक्तों ने उनके प्रति श्रद्धा, संयम व दासता के भाव प्रकट करते हुए भक्ति की। अपवाद स्वरूप कुछ रसिक रामकाव्य रचनाकार भी हुए जैसे अग्रदास, प्रयागदास, रामचरणदास। प्रयागदास का एक कथन उल्लेखनीय है, यहां पर कवि ने स्वयं को राम के साले के रूप में चित्रित किया है-

'नीम के आगे खाट पड़ी है खाट के नीचे करवा
प्रयागदास अलबेला सौवे, रामलला के सरवा।।'

(समाप्त)